Knowledge Consortium of Gujarat
Department of Higher Education - Government of Gujarat
Journal of Humanity - ISSN : 2279-0233

Continuous Issue -36 | October – November 2018

नीति- मानव जीवन में नीति की प्रासंगिकता

नीति[1] एक ऐसा शास्त्र है जिसे मनुष्य मात्र व्यवहार में लाता है, बिना इसके संसार में सुखपूर्वक निर्वाह नहीं हो सकता, और यदि नीति का अवलम्बन न किया जाय तो मनुष्य को संसार के अनेक कार्यों को कृत करने में कठिनता होगी। वह व्यक्ति जो नीति को भली भांति जानते व समझते हैं, प्रत्येक कठिन कार्य को भी सुचारू रूप से कर लेते हैं, किन्तु वह व्यक्ति जो नीति से बिल्कुल परे हैं, अत्यन्त सरल कार्य को भी करने में कठिनता का अनुभव करते हैं। हितोपदेश में नीति को दो प्रकार का बताया है- एक धर्म नीति, दूसरी राजनीति। इन दोनों नीतियों के लिये भारत वर्ष प्राचीन समय से सुप्रसिद्ध है।

आचार्य[2] राम चन्द्र वर्मा ने "लोक भारती प्रामाणिक हिन्दी कोश" में नीति शब्द को व्याख्यायित किया है- "व्यवहार की वह रीति जिससे अपना हित हो और दूसरों को कष्ट व हानि न पहुंचे एवं जनता या समाज के हित के लिए निश्चित् आचार व्यवहार और चलन।"

नीति की परिभाषा[3] व्यक्त करते हुए डॉ कपिल देव द्विवेदी जी कहते हैं कि राजनीतिशास्त्र का एक प्रचलित नाम नीतिशास्त्र भी है। नीति शब्द नी (ले जाना) धातु से बना है। अतः नीति का अर्थ होता है- मार्गदर्शन, पथ-प्रदर्शन। नीति की परिभाषा की गई है....."नीयते व्यंवस्थाप्यते स्वेषु-स्वेषु सदाचारेषु लोकाःया स नीतिः" अर्थात् जिसके द्वारा प्रजा अपने-अपने आचरणमें स्थापित की जाती है, कुमार्ग से हटाकर सन्मार्ग पर लाई जाती है, उसको नीति कहते है।

महाभारत में वर्णित अनेक महापुरुषों के नीति युक्त वचन कहें गए हैं।

विदुर नीति वचन-

1. धीर[4] मनुष्य को उचित है कि पहले कर्मों का प्रयोजन, परिणाम् तथा अपनी उन्नति का विचार करके फिर काम आरम्भ करे या न करें उदाहरण स्वरूप जैसे[5] मछली बढ़िया खाद्य वस्तु से ढकी हुई लोहे की कांटी को लोभ में पड़कर निगल जाती है परिणाम स्वरूप मर जाती है, क्योंकि उससे होने वाले परिणाम पर विचार नहीं करती है।

[1] "हितोपदेश"- सम्पादक-श्री नारायण राम आचार्य"- पृष्ठ - भूमिका, प्रकाशन - चैखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली- 110007

[2] लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी कोश, सम्पादक-आचार्य राम चन्द्र वर्मा, पृ0- 679

[3] "वेदों में राजनीतिशास्त्र" - "डा॰0 कपिलदेव द्विवेदी", पृ0-3 प्रकाशक - विश्वभारती अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर (भदोही)

[4] अनुबन्धं च सम्प्रेक्ष्य विपाकं चैव कर्मणाम्।
उत्थानमात्मनश्चैव धीरः कुर्वीत वा न वा।। महाभारत - उद्योगपर्व-34/9

[5] भक्ष्योत्तमप्रतिच्छन्तं मत्स्यो बडिशमायसम्।
लोभाभिपाती ग्रसते नानुबन्धभवेक्षते।। महाभारत-उद्योगपर्व-34/13

2. किसी[6] भी कर्म को करने से क्या लाभ होगा और न करने से क्या हानि होगी- इस प्रकार कर्मों के विषय में भली भांति विचार करके मनुष्य को कर्म करना या न करना चाहिए।
3. जिसका मूल[7] (साधन) छोटा और फल महान् हो, बुद्धिमान पुरुष को शीघ्र ही आरम्भ कर देना चाहिए।
4. जैसे शिलोञ्क्षवृत्ति[8] जीविका चलाने वाला अनाज का एक-एक दाना चुगता रहता है उसी प्रकार धीर पुरुष को जहाँ तहाँ से भावपूर्ण वचनों, सूक्तियों और सत्कर्मों का संग्रह करते रहना चाहिए।
5. ऐश्वर्य के मद[9] से मतवाला पुरुष भ्रष्ट हुए बिना होश में नहीं आता क्योंकि ऐश्वर्य का नशा ही बहुत बुरा है।
6. मधुर[10] शब्दों में कही हुई बात अनेक प्रकार से कल्याण करती है, किन्तु वही बात यदि कटु शब्दों में कही जाए तो महान् अनर्थ का कारण बन जाती है।
7. जो[11] नित्य गुरुजनों को प्रणाम करता है और वृद्ध पुरुषों की सेवा में लगा रहता है उसकी, कीर्ति, आयु, यश और बल इन चारों में वृद्धि होती है।

भारद्वाज कणिक नीति

1. यदि[12] मूल आधार को नष्ट कर दिया जाए तो उसके आश्रय से जीवन निर्वाह करने वाले सभी शत्रुओं का जीवन नष्ट हो जाता है। यदि वृक्ष की जड़ काट दी जाए तो उसकी शाखांए भी सूख जाएंगी।
2. जब[13] तक समय बदलकर अपने अनुकूल न हो जाए तब तक शत्रु को कन्धे पर बिठाकर ढोना भी पड़े तो वह भी करें, परन्तु जब अनुकूल समय आ जाए तब उसे उसी प्रकार नष्ट कर दे जैसे घड़े को पत्थर पर पटक कर फोड़ दिया जाता है।

[6] किन्नु मेस्यादिदं कृत्वा किन्नु में स्यादकुर्वतः।
इति कर्माणि संचिन्त्य कुर्याद् वा पुरुषो न वा।। महाभारत-उद्योगपर्व- 34/19

[7] कश्चिदर्थान नरः प्राज्ञोलधुमूलान् महाफलान्।
क्षिप्रमारभते कर्तुं न विघ्नयति ताद्शान।। महाभारत-उद्योगपर्व- 34/22

[8] सुव्याहृतानि सूक्तानि सुकृतानि ततस्ततः।
संचिन्वन् धीर आसीत शिलाहारी शिलं यथा।। महाभारत-उद्योगपर्व- 34/33

[9] ऐश्वर्यमदपापिष्ठा मदाः पानमदादयः।
ऐश्वर्यमदमत्तो हि नापतित्वा विबुध्यते।। महाभारत-उद्योगपर्व- 34/53

[10] अभ्यावहति कल्याणं विविधं वाक् सुभाषिता।
सैवदुर्भाषिता राजन्ननर्थायोपपद्यते।। महाभारत-उद्योगपर्व- 34/77

[11] अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
चत्वारि सम्प्रवर्धन्ते कीर्तिशयुर्यशो बलम्।। महाभारत-उद्योगपर्व- 39/74

[12] छिन्नमूले त्वधिष्ठाने सर्वेषां जीवनं हतंम्।
कथं हि शाखास्तिष्ठेयुश्छिन्नमूले वनस्पतौ।। महाभारत-शान्तिपर्व- 140/10

[13] वहेदमित्रं स्कन्धेन यावत्कालस्य पर्ययः।
प्राप्तकालं तु विज्ञाय भिन्द्याद् घटमिवाश्मनि।। महाभारत-शन्तिपर्व- 140/18

3. जो विश्वासपात्र[14] नहीं है उस पर कभी विश्वास नहीं करें, परन्तु जो विश्वासपात्र है उस पर भी अधिक विश्वास न करें, क्योंकि अधिक विश्वास से भय उत्पन्न होता है। अतः बिना जाने-बूझे किसी पर भी विश्वास न करें।
4. कोई[15] जन्म से ही मित्र अथवा शत्रु नहीं होता है, सामश्र्य योग से ही शत्रु और मित्र उत्पन्न होते रहते हैं।
5. किसी[16] कार्य को अच्छी तरह सम्पन्न किए बिना न छोड़े और सदा सावधान रहें। शरीर में गड़ा हुआ कांटा भी यदि पूर्ण रूप से न निकाल दिया जाए और उसका कुछ भाग शरीर में टूटकर शेष रह जाए तो वह चिर काल तक विकार उत्पन्न करता है।
6. यदि[17] बढ़ता हुआ ऋण रह जाए, तिरस्कृत शत्रु जीवित रहे और उपेक्षित रोग शेष रह जाए तो यह सब तीव्र भय उत्पन्न करते है।
7. जो[18] कार्य भविष्य में करना हो उस पर बुद्धि से विचार करें और विचारने के पश्चात् तदनुकूल व्यवस्था करें। इसी प्रकार जो कार्य सामने उपस्थित हो उसे भी बुद्धि से विचार कर ही करें। बुद्धि से निश्चय किये बिना किसी भी कार्य या उद्देश्य का परित्याग न करें।

कृष्ण नीति वचन

1. अपने[19] जीवन की रक्षा करने वाले पुरुष को चाहिए कि जो शत्रु साम और दान से शान्त न हों, उन पर दण्ड का प्रयोग करना चाहिए।
2. भाई[20] - बन्धुओं में परस्पर फूट होने का अवसर आने पर जो मित्र सर्वथा प्रयत्न करके उनमें मेल कराने के लिये मध्यस्थता नहीं करता, उसे विद्वान् पुरुष मित्र नहीं मानते हैं।
3. जो[21] मनुष्य सत्पुरुषों की सम्मति का उल्लङ्घन करके दुष्टों के मत के अनुसार चलता है, उसके सुहृद उसे शीघ्र ही विपत्ति में पड़ा देख शोक के भागी होते हैं।

[14] न विश्वसेद - विश्वस्ते विश्वस्ते नातिविश्वसेत्।
विश्वासाद् भयमभ्येति नापरीक्ष्य च विश्वसेद्।। महाभारत-शान्तिपर्व- 140/43

[15] नास्ति जात्या रिपुर्नाम मित्रं वापि न विद्यते।
सामश्र्य योगाज्जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा।। महाभारत-शान्तिपर्व - 140/5

[16] नासम्यक कृतकारी स्याद्प्रमत्तः सदा भवेत्।
कण्टकोऽपि हि दुश्द्यिन्नो विकारं कुरुते चिरम्।। महाभारत-शान्तिपर्व- 140/60

[17] वर्धमानमृणं तिष्ठेत् परिभूताश्च शत्रवः।
ज्नयन्ति भयं तीवंर व्याधयश्चाप्युपेक्षिताः।। महाभारत-शान्तिपर्व- 140/59

[18] अनागतं हि बुध्येत यच्च कार्य - पुरः स्थितम्।
न तु बुद्धिक्षयात् किंचिंद्तिक्रामेत् प्रयोजनम्।। महाभारत-आदिपर्व- 139/48

[19] साम्ना दानेन वा कृष्ण ये न शाम्यन्तिशत्रवः।
योक्तव्यस्तेषु दण्डः स्याज्जीवितं परिरक्षता।। महाभारत-उद्योगपर्व- 82/13

[20] ज्ञातीनां हि मिथो भेदे यन्मित्रं नाभिपद्यते।
सर्वयत्नेन माध्यस्थ्यं न तन्मित्रं विदुर्बुधाः।। महाभारत-उद्योगपर्व- 93/15

4. जो[22] उत्तम व्यवहार करने वाले सत्पुरुषों के साथ असद्व्यवहार करता है, वह कुल्हाड़ी से जंगल की भाँति उस दुव्र्यवहार से अपने-आपको ही काटता है।

5. मनुष्य[23] जिसका पराभव न करना चाहे, उसकी बुद्धि का उच्छेद न करे। जिसकी बुद्धि नष्ट नहीं हुई है, उसी पुरुष का मन कल्याणकारी कार्यों में प्रवृत्त होता है।
6. जूए[24] के विषय में भगवान् श्री कृष्ण कहते हैं कि जूए का खेल तो सत्पुरुषों की बुद्धि को भी नाश करने वाला है और यदि दुष्ट पुरुष उसमें प्रवृत्त हों तो उनमें बड़ा भारी कलह होता है तथा उन सब पर बहुत से संकट छा जाते हैं।
7. जो[25] दूसरे के साथ छल-कपट अथवा धोखा करके सुख भोग रहा हो, उसे मार डालना चाहिये।

भीष्म नीति वचन

1. घमण्ड[26] में भरकर कत्र्तव्य और अकत्र्तव्य का ज्ञान न रखने वाले तथा कुमार्ग पर चलने वाले मनुष्य को, यदि अपना गुरू हो तो भी उसे, दण्ड देने का सनातन विधान है।
2. मनुष्य[27] को अपने मन को वश में करके, क्रोध पर विजय प्राप्त करके तथा शास्त्रों के सिद्धान्त का निश्चयात्मक ज्ञान प्राप्त करके, धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष के प्रयत्न में निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए।
3. मनुष्य[28] को किसी पर भी (विश्वसनीय व्यक्ति पर भी) अति विश्वास नहीं करना चाहिए, इन सबके गुण दोषों को अपनी बुद्धि द्वारा सदा निरीक्षण करते रहना चाहिये।

[21] सतां मतमतिक्रम्य योऽसतां वर्तते मते।
शोचन्ते व्यसने तस्य सुहृदो नचिरादिव।। महाभारत-उद्योगपर्व-124/26

[22] आत्मानं तक्षति ह्मेषं वनं परशुना यथा।
यः सम्यग्वर्तमानेषु मिथ्या राजन् प्रवर्तते।। महाभारत-उद्योगपर्व-124/40

[23] न तस्य हि मतिं छिन्द्याद् यस्य नेच्छेत् पराभवम्
अविच्छिन्नमतेरस्य कल्याणे धीयते मतिः।
आत्मवान् नावमन्येत त्रिषु लोकेषु भारत।। महाभारत-उद्योगपर्व-124/41

[24] अक्षद्यूतं महाप्राज्ञ सतां मतिविनाशनम्।
असवां तत्र जायन्ते भेदाश्च व्यसनानि च।। महाभारत- उद्योगपर्व-124/6

[25] निकृत्यो पचरन् बध्य एष धर्मः सनातनः।। महाभारत - वनपर्व - 12/7

[26] गुरोरप्यवलिप्तस्य कार्याकार्यमजानतः।
उत्पथप्रतिपन्नस्य दण्डो भवति शाश्वतः।। महाभारत-शान्तिपर्व-57/7

[27] आत्मवांश्च जितक्रोधः शास्त्रार्थकृतनिश्चयः।
धर्मे चार्थे च कामे च मोक्षे च सततं रतः।। महाभारत-शन्तिपर्व - 57/13

[28] न विश्वसेच्च नृपतिर्न चात्यर्थं च विश्वसेत्।
षाड्गुण्यगुणदोषांश्च नित्यं बुद्धयावलोकयेत्।। महाभारत-शान्तिपर्व - 57/16

4. साधु[29] पुरुषों के हाँथ से कभी धन छीनना नहीं चाहिए अपितु उन्हे धन देते रहना चाहिये। असाधु पुरुषों से दण्ड के रूप में धन लेते रहना चाहिए।
5. मनुष्य[30] को निरन्तर शुद्ध एवं सदाचारी बना रहकर, मन को वश में करके, सुरम्य साधन से युक्त रहकर, समय≤ पर धन का दान और उसका उपभोग भी करते रहना चाहिए।

6. जिस[31] मनुष्य में क्रोध का अभाव, दुव्र्यसनों से दूर रहने की क्षमता, कठोर दण्ड नहीं देने का अभाव तथा अपनी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर लेने की प्रबल शक्ति होती है वह सम्पूर्ण प्रांणियों का विश्वासपात्र बन जाता है।
7. कूटनीति,[32] कपट, माया तथा ईष्र्या का सर्वथा अभाव हो जाने पर सनातन धर्म का पालन होता है।

नीति सन्मार्ग की ओर ले जाने का प्रमुख साधन है, सबका उपकार करने वाला है, समाज को सुरक्षित करता है और चतुर्वर्ग को सिद्ध करता है, अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों का मार्ग प्रशस्त करता है।

[29] न चाद्दीत वित्तानि सतां हस्तात् कदाचन।
असद्भ्यश्च समाददयात् स´यस्तु प्रतिपादयेत्।। महाभारत- शान्तिपर्व-57/21

[30] स्वयं प्रहर्ता दाता च वश्यात्मा रम्यसाधनः।
काले दाता च भोक्ता च शुद्धाचारस्तथैव च।। महाभारत-शान्तिपर्व - 57/22

[31] अक्रोधनो हयव्यसनी मृदुदण्डो जितेन्द्रियः।
राजा भवति भूतानां विश्वास्यो हिमवानिव।। महाभारत-शान्तिपर्व - 57/29

[32] न यस्य कूटं कपटं न माया न च मत्सरः।
विषये भूमिपालस्य तस्य धर्मः सनातनः।। महाभारत-शान्तिपर्व - 57/37

सारांश

नीति एक ऐसा शास्त्र है कि जिसको मनुष्यमात्र व्यवहार में लाता है, बिना इसके संसार में सुखपूर्वक निर्वाह नहीं हो सकता और यदि नीति का अवलम्बन न किया जाय तो मनुष्य को संसार के अनेक कार्यों को कृत करने में कठिनता होगी। वह व्यक्ति जो नीति को भली भांति जानते व समझते हैं, प्रत्येक कठिन कार्य को भी सुचारू रूप से कर लेते हैं, किन्तु वह व्यक्ति जो नीति से बिल्कुल परे हैं, अत्यन्त सरल कार्य को भी करने में कठिनता का अनुभव करते हैं। महाभारत में विदुर नीति, भारद्वाज कणिक नीति, कृष्णनीति, भीष्मनीति में श्लोकों के द्वारा अनके नीति युक्त वचन बताये गए हैं। नीति सन्मार्ग की ओर ले जाने का प्रमुख साधन है, सबका उपकार करने वाला है, समाज को सुरक्षित करता है और चतुवर्ग को सिद्ध करता है अर्थात् धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों का मार्ग प्रशस्त करता है।

निष्कर्षतः महापुरुषों द्वारा बताए गए नीति युक्त वचनों का अवलम्बन किया जाए तो निश्चित रूप से मानव जीवन में कभी भी मार्ग से विचलित नहीं हो सकता वह सदैव पथ प्रदर्शक एवं उचित पथ का गामी होगा।

सन्दर्भ

I. "हितोपदेश"- सम्पादक-श्री नारायण राम आचार्य"- पृष्ठ - भूमिका, प्रकाशन - चैखम्बा संस्कृत प्रतिष्ठान दिल्ली- 110007
II. लोकभारती प्रामाणिक हिन्दी कोश, सम्पादक-आचार्य रामचन्द्र वर्मा, पृ0 679
III. "वेदों में राजनीतिशास्त्र" - "डा॔0 कपिलदेव द्विवेदी", पृ0-3 प्रकाशक - विश्वभारती अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर (भदोही)
IV. महाभारत - उद्योगपर्व-34/9

V. महाभारत-उद्योगपर्व-34/13
VI. महाभारत - उद्योगपर्व - 34/19
VII. महाभारत - उद्योगपर्व - 34/22
VIII. महाभारत - उद्योगपर्व - 34/33
IX. महाभारत - उद्योगपर्व - 34/53
X. महाभारत - उद्योगपर्व - 34/77
XI. महाभारत - उद्योगपर्व - 39/74
XII. महाभारत - शान्तिपर्व - 140/10
XIII. महाभारत - शन्तिपर्व - 140/18
XIV. महाभारत - शान्तिपर्व - 140/43
XV. महाभारत - शान्तिपर्व - 140/5
XVI. महाभारत - शान्तिपर्व - 140/60
XVII. महाभारत - शान्तिपर्व 140/59
XVIII. महाभारत - आदिपर्व 139/48
XIX. महाभारत - उद्योगपर्व 82/13
XX. महाभारत - उद्योगपर्व 93/15
XXI. महाभारत - उद्योगपर्व 124/26
XXII. महाभारत - उद्योगपर्व 124/40
XXIII. महाभारत - उद्योगपर्व 124/41
XXIV. महाभारत - उद्योगपर्व 124/6
XXV. महाभारत - वनपर्व - 12/7
XXVI. महाभारत - शान्तिपर्व 57/7
XXVII. महाभारत - शन्तिपर्व - 57/13
XXVIII. महाभारत - शान्तिपर्व - 57/16
XXIX. महाभारत - शान्तिपर्व 57/21
XXX. महाभारत - शान्तिपर्व - 57/22
XXXI. महाभारत - शान्तिपर्व - 57/29
XXXII. महाभारत - शान्तिपर्व - 57/37

****

डॉ नमता सिंह
कानपुर विद्या मन्दिर महिला (पी.जी.)
महाविद्यालय
कानपुर

डॉ आशा रानी राय
कानपुर विद्या मन्दिर महिला (पी.जी.)
महाविद्यालय
कानपुर

Copyright © 2012 - 2018 KCG. All Rights Reserved. | Powered By: Knowledge Consortium of Gujarat